समस्याएँ आती रहती हैं। इन समस्त समस्याओं के निदान करने के लिए निर्देशन की आवश्यकता होती है। अतः व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यावसायिक जीवन निर्देशन के कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।

(1) शैक्षिक निर्देशन के क्षेत्र में निर्देशन प्रक्रिया का उपयोग

(i) वांछित पाठ्यक्रम पर आधारित विषयों का चयन करने में।

(ii) पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के चयन हेतु

(iii) नवीन पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में निर्णय लेने में

(iv) अधिगम प्रक्रिया के निरन्तर अपेक्षित व्यावहारिक स्तर बनाये रखने की दृष्टि से।

(v) राष्ट्रीय एकता पर आधारित कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु प्रेरित करने की दृष्टि से।

(vi) अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या का समाधान करने के लिए।

(vii) प्रौढ़ शिक्षा पर आधारित कार्यक्रमों की दिशा में प्रेरित करने हेतु।

(2) शैक्षिक क्षेत्र के समान ही व्यावसायिक क्षेत्र में भी निर्देशन की भूमिका का विशेष महत्व है—

(1) योग्यतानुकूल व्यवसाय का चयन करने में

(2) व्यावसायिक क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों से परिचित कराने के लिए।

3. व्यावसायिक अवसरों में विविधता की दृष्टि से

4. श्रम एवं उद्योग की परिस्थितियों में वांछित परिवर्तन करने के लिए

5. विशिष्टीकरण की दिशा में प्रेरित करने हेतु तथा

6. नव विकसित तकनीकी से परिचित कराने के लिए।

notes
Phone
email

8 3. वैयक्तिक समस्याओं के समाधान हेतु भी निर्देशन का व्यापक उपयोग →

9 (i) संकट कालीन स्थिति के निरन्तर मानसिक एवं संवेगात्मक सन्तुलन बनाए रखने में।

10 (ii) व्यक्तिगत समस्या का समाधान करने हेतु वांछित निर्णय शक्ति का विकास करने में।

(iii) व्यक्तिगत समायोजन में वृद्धि करने हेतु।

(iv) पारिवारिक संघर्ष से मुक्त होने में।

12 (v) पारिवारिक जीवन में समायोजन की वृद्धि से

(vi) अवकाश के समय का सदुपयोग करने के लिए।

13

14

15

16

17

18

19

JANUARY '20

12 Day 012-354 Wk-02
SUNDAY

निर्देशन की प्रकृति
(Nature of Guidance)

1. निर्देशन एक सतत् प्रक्रिया है (Guidance is a continuous Process) → निर्देशन एक प्रक्रिया है, जो जीवन की प्रत्येक अवस्था में निरन्तर चलती रहती है। इसका उद्देश्य व्यक्ति की व्यक्तिगत तथा सामाजिक समायोजन में सहायता करना है।

2. निर्देशन स्वयं में शिक्षा है (Guidance is Education by Self) → निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति को स्वयं समझने के लिये शिक्षित करना है तथा उसकी क्षमताओं का ऐसा खुलासा करना है कि वह स्वयं को समायोजित तथा समुदाय का एक उपयोगी सदस्य सिद्ध कर सके। इस प्रकार निर्देशन एक महत्वपूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया है।

3. वैयक्तिक सहायता (Personal Assistance) निर्देशन एक व्यक्तिगत सहायता है, भले ही निर्देशन समूह में दिया जा रहा हो। निर्देशन में सहायता का केन्द्र बिन्दु व्यक्ति होता है।

4. निर्देशन का व्यापक क्षेत्र - Wide Scope of Guidance निर्देशन में लिंग और आयु के आधार पर विभेद नहीं होता है। निर्देशन स्त्री-पुरुष दोनों तथा विभिन्न आयु वाले व्यक्तियों को सही दिशा दिखाने उनकी समस्या समाधान में सहायता करता है।

notes
Phone
email
website

Scanned with CamScanner

5. आत्म-निर्देशन की योग्यता का विकास — To develop Ability of self-Guidance) → निर्देशन प्रक्रिया व्यक्ति में स्वनिर्देशन की शक्ति की योग्यता का विकास करके उसको निर्देशन हेतु आत्म-निर्भर बनाती है।

6. व्यक्ति-केन्द्रित सेवा -(Client centred service) व्यक्ति को विकास का आधार मानकर निर्देशन का केन्द्र व्यक्ति विशेष होता है। ~~इसको~~ इसलिये निर्देशन को व्यक्ति-केन्द्रित सेवा कहते हैं।

7. प्रशिक्षित कार्य (Trained task) निर्देशन एक कौशल युक्त प्रक्रिया कहलाती है क्योंकि निर्देश देने के लिये आवश्यक सभी मार्गदर्शक तकनीकों में प्रशिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता होती है।

8. निर्देशन थोपा नहीं जाता (Guidance is not Imposed) निर्देशन में व्यक्ति स्वतंत्र होता है कि वह उपबोधक के परामर्श को स्वीकार करे अथवा नहीं करे। इसमें कोई भी निर्णय थोपा नहीं जाता है।

9. क्षमताओं का विकास - (Development of capacities) निर्देशन में व्यक्ति की सहायता स्वयं की क्षमताओं से परिचित होने और उनको विकसित करने के लिये की जाती है।

10. निर्देशन एक सहकारी प्रक्रिया (Guidance is a cooperative process) → निर्देशन एक सहकारी प्रक्रिया है जिसमें सभी संस्थाओं का सहयोग आवश्यक है। विद्यालय स्तर पर आवश्यक है कि सभी संस्थाओं के सदस्य निर्देशन में सहयोग करें। इसमें माता-पिता, अभिभावक, शिक्षक, प्रधानाध्यापक, उपबोधक, मनोवैज्ञानिक आदि की भूमिका महत्वपूर्ण है।